B.A. Part 2
Paper III

(2)

9.9.20

(औद्योगिक पिछड़ापन दूर करने के उपाय
एवं औद्योगिक विकास के लिए सुझाव !

measures for the removal of Industrial backwardness
or
Suggestions for rapid industrialisation of India.)

द्रुतगति से औद्योगिक विकास के लिए निम्नलिखित प्रयत्नों को काम लाने की आवश्यकता है-

(1) प्राकृतिक साधनों का समुचित उपयोग (Proper utilisation of Natural Resources) - प्रकृति ने भारत को प्राकृतिक साधनों प्रदान करने में उदारतापूर्वक काम लिया है। यहाँ प्राकृतिक साधनों का विशाल भंडार है जिनके समुचित उपयोग के द्वारा हम देश का औद्योगिक विकास कर सकते हैं। जिस प्रकार पिछले कुछ वर्षों में देश में शक्ति का विकास हुआ है उसी प्रकार हमारी विशाल प्राकृतिक सम्पत्ति के समुचित विकास द्वारा यथेष्ट मात्रा में देश का औद्योगिक विकास भी किया जा सकता है।

(2) श्रमिकों की कार्य-क्षमता में वृद्धि (Increase in the efficiency of labour) - उद्योग-धन्धों के विकास में श्रमिकों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। अतएव श्रमिकों के रहन-सहन के स्तर में सुधार के साथ-साथ इनकी उत्पादकता बढ़ाने का प्रयत्न भी किया जाना चाहिए। वास्तव में, श्रम को प्रबन्ध में साझेदार बनाना चाहिए ताकि वह उत्पादन बढ़ाने में रुचि ले सके। साथ ही, औद्योगिक सम्बन्धों में सुधार पर जोर देना चाहिए। दूसरी ओर, श्रमिकों - संघों को अपने-अपने सदस्यों की कार्य-क्षमता बढ़ाने की ओर ध्यान देना चाहिए।

(3) पूँजी - निर्माण की दर में वृद्धि (Increase in the rate of capital formation) - औद्योगिक विकास के साथ-साथ निजी एवं सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों में पूँजी की माँग बढ़ेगी। अतः पूँजी-निर्माण में वृद्धि के उपायों को काम में लाना चाहिए। इस उद्देश्य से बचत को प्रोत्साहन देना चाहिए। इधर कुछ वर्षों से सरकार ने पूँजी की पूर्ति को बढ़ाने के लिए कई प्रकार की वित्तीय संस्थाएँ स्थापित की हैं। इस क्षेत्र में बहुत अधिक सुधार की आशा भी की जाती है। व्यावसायिक बैंकों के राष्ट्रीयकरण से भी इसमें सहायता मिली है। वर्तमान में भारत में पूँजी निर्माण की दर बढ़कर 25% के लगभग हो गयी है जो वास्तव में प्रशंसनीय है।

(4) विदेशी पूँजी को प्रोत्साहन (Encouragement to Foreign Capital) - औद्योगिक ~~विकास की~~ प्रारंभिक स्थिति में किसी भी देश के लिए विदेशी पूँजी बहुत अधिक लाभदायक सिद्ध होती है। देश में विदेशी पूँजी को आकर्षित करने के लिए अनुकूल

Scanned by CamScanner

परिस्थितियाँ उत्पन्न करनी होगी। साथ ही, विदेशी पूँजी का अधिकतम विकास के कार्य में उपयोग करना चाहिए। जून, 1966 ई० में रुपये के अवमूल्यन के बाद विदेशी पूँजी के अधिक मात्रा में भारत आने की आशा थी, किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं हो सका। परन्तु 1991 की नयी उदार आर्थिक नीति के अंतर्गत विदेशी पूँजी को प्रोत्साहित करने के लिए कई प्रकार के प्रतिबंधों को समाप्त कर दिया गया है। अब आमतौर पर 51% तक हिस्सा पूँजी में विदेशी पूँजी लगाई जा सकती है। इससे विदेशी पूँजी का बड़े पैमाने पर देश में पदार्पण हो रहा है।

- (5) निजी क्षेत्र के दृष्टिकोण में परिवर्तन की आवश्यकता - वर्तमान आर्थिक व्यवस्था के अंतर्गत देश के औद्योगिक विकास में निजी क्षेत्र का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। किन्तु पहले कुछ वर्षों में निजी क्षेत्र ने सरकारी नीति की बहुत अधिक निन्दा की और साथ ही सार्वजनिक हित को सर्वोपरि मानकर चलना होगा। वास्तव में, दोनों क्षेत्रों को एक-दूसरे के साथ ~~मिलकर~~ मिलजुल कर पूरक के रूप में कार्य करना चाहिए। इसी से भारत का तीव्र गति से औद्योगिकरण हो सकेगा।

- (6) औद्योगिक नियोजन (Industrial Planning) - एक अर्द्ध-विकसित आर्थिक ~~विकास~~ व्यवस्था वाले देश के लिए औद्योगिक नियोजन का बहुत अधिक महत्त्व है। भारत में भी औद्योगिकरण की एक दीर्घकालीन योजना सरकार द्वारा तैयार की जानी चाहिए, किन्तु केवल औद्योगिक नियोजन से ही स्थिति में सुधार की आशा नहीं की जा सकती। औद्योगिक नियोजन में तीन बातों पर विशेष रूप से जोर देना चाहिए - (क) आर्थिक व्यवस्था के विभिन्न अंगों को संतुलित विकास, (ख) उद्योग-धन्धों के विकास को प्राथमिकता, तथा (ग) औद्योगीकरण की आवश्यक सीमा का निर्धारण।

- (7) कृषि का विकास (Development of Agriculture) - औद्योगिक विकास के लिए कृषि का विकास भी अनिवार्य है। कुछ लोग कृषि को उद्योग-धन्धे का प्रतिद्वन्द्वी समझते हैं, किन्तु वास्तव में कृषि उद्योगों का पूरक है। कृषि से कुछ प्रमुख उद्योग-धन्धों को कच्चे पदार्थ जैसे - गन्ना, जूट, कपास, तिलहन, तम्बाकू इत्यादि प्राप्त होते हैं। साथ ही, कृषि के विकास से किसानों की क्रय-~~श~~ शक्ति में भी वृद्धि होती है जिससे उद्योग-~~धन्धा~~ धन्धों की वस्तुओं की मांग में भी वृद्धि होती है। अतः देश के औद्योगीकरण के लिए कृषि का विकास भी नितांत अनिवार्य है।

- (8) औद्योगिक वित्त की व्यवस्था - वित्त उद्योग-धन्धों का प्राण है। किन्तु भारत में ~~औद्योगिक~~ औद्योगिक वित्त प्रदान करने वाली विशेषज्ञ संस्थाओं का अभी अभाव है। देश में एक औद्योगिक विकास बैंक, एक औद्योगिक वित्त निगम तथा राज्यों में एक-एक प्रायः सभी राज्य वित्तीय निगम अवश्य ~~है~~ हैं, किन्तु ये औद्योगिकरण की बढ़ती हुई आवश्यकताओं को देखते हुए अपर्याप्त हैं। अतएव औद्योगिक वित्त की समुचित व्यवस्था भी अनिवार्य है।

उपरोक्त सुझावों को काम में लाकर ही भारत तेजी से अपना औद्योगीकरण कर सकेगा। संतोष का विषय है कि पंचवर्षीय योजनाओं में इस क्षेत्र में प्रयास किये गये जिनमें पर्याप्त सफलता भी मिली।

Scanned by CamScanner